FATIHA KA MUKHTASAR TARIQA

ATTARI BOOKS

फ़ातिहा का मुख़्तसर तरीक़ा

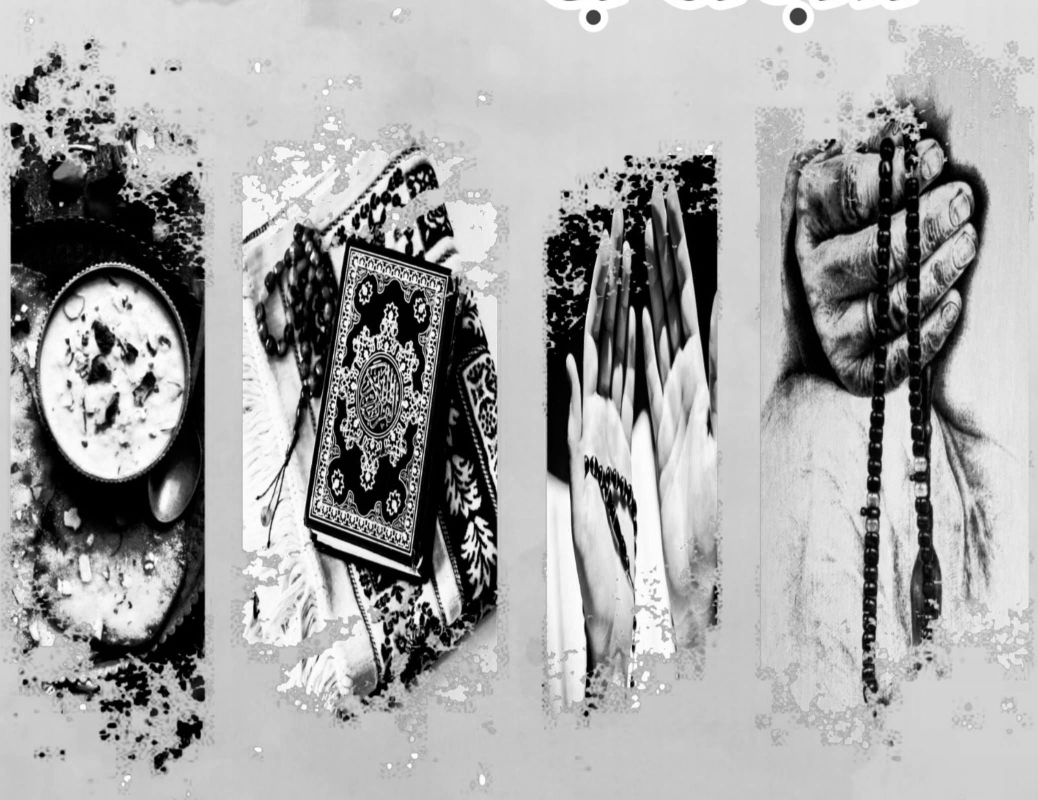

तालीफ़ः

मुहम्मद वसीम अत्तारी

पेशकशः

عطاری بکس

ATTARI BOOKS

Free Online eBook Downloads

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

दुरूदे पाक की फज़ीलत

फरमाने आख़री नबी ﷺ

ब-रोज़-ए क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब-तर वह होगा जिसने दुनिया में मुझ पर ज़्यादा दुरुद-ए-पाक पढ़े होंगे।" (तिर्मिज़ी ज-2 स-27 हदीस 484)

जिस्म और रूह की सलामती

किसी अक़्लमंद का क़ौल है कि जिस्म की सलामती कम खाने में है और रूह की बक़ा कम गुनाहों में है, और ईमान की सलामती हुज़ूर नबी करीम रऊफ़ रहीम ﷺ पर सलातो सलाम पढ़ने में है। (मुकाशिफ़तुल क़ुलूब, स. 9)

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد ﷺ

ईसाले सवाब की अस्ल

मय्यित का तीजा, दसवां, चालीसवां और बरसी करना बहुत अच्छे काम हैं कि ये ईसाले सवाब के ही ज़राएअ़ हैं। शरीअ़त में तीजे वग़ैरह के

अ़-दमे जवाज़ (या'नी ना जाइज़ होने) की दलील न होना ख़ुद दलीले जवाज़ है और मय्यित के लिये ज़िन्दों का दुआ़ करना क़ुरआने करीम से साबित है जो कि "ईसाले सवाब" की अस्ल है। चुनान्चे पारह 28 सू-रतुल ह़श्र आयत 10 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है:

وَ الَّذِیۡنَ جَآءُوۡ مِنۡۢ بَعۡدِهِمۡ یَقُوۡلُوۡنَ رَبَّنَا
اغۡفِرۡ لَنَا وَ لِاِخۡوَانِنَا الَّذِیۡنَ سَبَقُوۡنَا بِالۡاِیۡمَانِ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :

और वोह जो उन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब (عَزَّوَجَلَّ) ! हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए ।

ईसाले सवाब का तरीक़ा

ईसाले सवाब (या'नी सवाब पहुंचाने) के लिये दिल में निय्यत कर लेना काफ़ी है, म-सलन आप ने किसी को एक रुपिया ख़ैरात दिया या एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा या किसी को एक सुन्नत बताई या किसी पर इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए नेकी की दा'वत दी या सुन्नतों भरा बयान किया। अल गरज़ कोई भी नेक काम किया आप दिल ही दिल में इस त़रह़ निय्यत कर लीजिये, म-सलन: "अभी मैं ने जो सुन्नत बताई इस का सवाब सरकारे मदीना ﷺ को पहुंचे।" اِنۡ شَآءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ सवाब पहुंच जाएगा। मजीद जिन जिन की निय्यत करेंगे उन को भी पहुंचेगा। दिल में निय्यत होने के साथ साथ ज़बान से कह लेना भी अच्छा है कि येह सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ से साबित है जैसा कि हदीसे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ में गुज़रा कि उन्हों ने कुआं खुदवा कर फ़रमाया هٰذِهٖ لِاُمِّ سَعد या'नी

येह उम्मे सा'द के लिये है।"

ईसाले सवाब का मुरव्वजा त़रीक़ा

आज कल मुसल्मानों में ख़ुसूसन खाने पर जो फ़ातिह़ा का त़रीक़ा राइज है वोह भी बहुत अच्छा है। जिन खानों का ईसाले सवाब करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब कुछ सामने रख लीजिये।

अब :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ

पढ़ कर एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ يٰۤاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱﴾ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿۲﴾ وَلَاۤ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ﴿۳﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ﴿۴﴾ وَلَاۤ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾

तीन बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمْ یَلِدْ ۙ۬ وَ لَمْ
یُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنْ شَرِّ غَاسِقٍ
اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنْ شَرِّ حَاسِدٍ
اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ
ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِ ۪ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ
صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ﴿۶﴾

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ یَوْمِ
الدِّیْنِ ؕ﴿۳﴾ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِیْمَ ۙ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۙ۬ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ
عَلَیْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّیْنَ ﴿۷﴾

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الٓمّٓ ۚ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَیْبَ ۛۚ فِیْهِ ۛۚ هُدًی لِّلْمُتَّقِیْنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیْنَ
یُؤْمِنُوْنَ بِالْغَیْبِ وَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ ۙ﴿۳﴾
وَالَّذِیْنَ یُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَیْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ
وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ یُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰی هُدًی مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ
وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :

(1) وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾
(پ۲، البقرۃ : ۱۶۳)

(2) اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ (پ۸، الاعراف : ۵۶)

(3) وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷، الانبیاء : ۱۰۷)

(4) مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَ
خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾
(پ۲۲، الاحزاب : ۴۰)

(5) اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓىٕكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
صَلُّوْا عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب : ۵۶)

अब दुरूद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ
صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه

इस के बा'द येह आयात पढ़िये :

سُبۡحٰنَ رَبِّکَ رَبِّ الۡعِزَّۃِ عَمَّا یَصِفُوۡنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَی الۡمُرۡسَلِیۡنَ ﴿۱۸۱﴾ وَ الۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱۸۲﴾

(پ۲۳، اَلصّٰفّٰت : ۱۸۰۔ ۱۸۲)

अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला हाथ उठा कर बुलन्द आवाज़ से "अल फ़ातिह़ा" कहे। सब लोग आहिस्ता से या'नी इतनी आवाज़ से कि सिर्फ़ ख़ुद सुनें सू-रतुल फ़ातिह़ा पढ़ें । अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला इस त़रह़ ए'लान करे : "मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आप ने जो कुछ पढ़ा है उस का सवाब मुझे दे दीजिये ।" तमाम ह़ाज़िरीन कह दें: "आप को दिया ।" अब फ़ातिह़ा पढ़ाने वाला ईसाले सवाब कर दे ।

आ'ला ह़ज़रत رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ का फ़ातिह़ा का त़रीक़ा

ईसाले सवाब के अल्फ़ाज़ लिखने से क़ब्ल इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ الرَّحۡمٰن फ़ातिह़ा से क़ब्ल जो सूरतें वग़ैरह पढ़ते थे वोह भी तह़रीर की जाती हैं :

एक बार :

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۱﴾ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ﴿۲﴾ مٰلِکِ یَوۡمِ

الدِّيۡنِ ﴿٣﴾ اِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ ﴿٤﴾ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ
الۡمُسۡتَقِيۡمَ ﴿٥﴾ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ ۙ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ
عَلَيۡهِمۡ وَ لَا الضَّآلِّيۡنَ ﴿٧﴾

एक बार :

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلۡحَیُّ الۡقَیُّوۡمُ ۬ۚ لَا تَاۡخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوۡمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی
السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ مَنۡ ذَا الَّذِیۡ یَشۡفَعُ عِنۡدَهٗۤ اِلَّا بِاِذۡنِهٖ ؕ
یَعۡلَمُ مَا بَیۡنَ اَیۡدِیۡهِمۡ وَ مَا خَلۡفَهُمۡ ۚ وَ لَا یُحِیۡطُوۡنَ بِشَیۡءٍ مِّنۡ
عِلۡمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرۡسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضَ ۚ وَ لَا یَـُٔوۡدُهٗ
حِفۡظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الۡعَلِیُّ الۡعَظِیۡمُ ﴿٢٥٥﴾ (پ۳، البقرۃ : ۲۵۵)

तीन बार :

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿١﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿٢﴾ لَمۡ یَلِدۡ ۙ وَ لَمۡ یُوۡلَدۡ ۙ﴿٣﴾ وَ لَمۡ
یَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿٤﴾

ईसाले सवाब के लिये दुआ का त़रीक़ा

या अल्लाह عَزَّوَجَلَّ! जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वग़ैरा है तो इस त़रह़ से भी कहिये) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है उस का सवाब हमारे नाक़िस अमल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा। और इसे हमारी जानिब से प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब ﷺ की बारगाह में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना ﷺ के तवस्सुत़ से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام तमाम सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان तमाम औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की जनाब में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना ﷺ के तवस्सुत़ से सय्यिदुना आदम सफ़िय्युल्लाह عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात मुसल्मान हुए या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा। इस दौरान बेहतर येह है कि जिन जिन बुज़ुर्गों को ख़ुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाइये। अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को भी नाम ब नाम ईसाले सवाब कीजिये।(फ़ौत शु-दगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को ख़ुशी ह़ासिल होती है अगर किसी का भी नाम न लें सिर्फ़ इतना ही कह लें कि या अल्लाह! इस का सवाब आज तक जितने भी अहले ईमान हुए उन सब को पहुंचा तब भी हर एक को पहुंच जाएगा। اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ)

मज़ार पर ह़ाज़िरी का त़रीक़ा

बुज़ुर्गों की ज़ाहिरी ज़िन्दगी में भी क़दमों की तरफ़ से या'नी चेहरे के सामने से ह़ाज़िर होना चाहिये, पीछे से आने की सूरत में उन्हें मुड़ कर देखने की ज़ह़मत होती है। लिहाज़ा बुज़ुर्गाने दीन के मज़ारात पर भी पाइंती (या'नी क़दमों) की तरफ़ से ह़ाज़िर हो कर फिर क़िब्ले को पीठ और साह़िबे मज़ार के चेहरे की

त़रफ़ रुख़ कर के कम अज़ कम चार हाथ (या'नी तक़रीबन दो गज़) दूर खड़ा हो और इस त़रह़ सलाम अ़र्ज़ करे:

اَلسَّلَامُ عَلَيكَ يا سَيِّدِیْ وَ رَحْمَةُ اللهِ وَ بَرَكَاتُهٗ

एक बार सू-रतुल फ़ातिह़ा और 11 बार सू-रतुल इख़्लास (अव्वल आख़िर एक या तीन बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर हाथ उठा कर ऊपर दिये हुए त़रीक़े के मुत़ाबिक़ (साह़िबे मज़ार का नाम ले कर भी) ईसाले सवाब करे और दुआ़ मांगे। " अह्सनुल विआ़अ " में है: वली के मज़ार के पास दुआ़ क़बूल होती है।

(माख़ूज़ अज़ अह्सनुल विआ़अ, स. 140)

इलाही वासित़ा कुल औलिया का मेरा हर एक पूरा मुद्दआ़ हो

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

जुमुआ को ज़ियारते क़ब्र की फ़ज़ीलत

जो शख़्स जुमुआ के रोज़ अपने वालिदैन या इन में से किसी एक की क़ब्र की ज़ियारत करे और उस के पास सूरए यासीन पढ़े बख़्श दिया जाए।

(الکامل لابن عدی ج ٦ ص ٢٦٠)

लाज रख ले गुनाहगारों की, नाम रहमान है तेरा या रब

عطاری بکس
ATTARI BOOKS
Free Online eBook Downloads

BOOK DOWNLOAD LINK :
HTTPS://T.ME/ATTARIBOOKS
HTTPS://ARCHIVE.ORG/DETAILS/@ATTARI_BOOKS

CONTACT US : ATTARIBOOKS26@GMAIL.COM